डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 जून 2010 : मूल्य - पाँच रुपये

# अजायब बानी

{गुरु महिमा}

वर्ष - आठवां | अंक-दूसरा | जून-2010 | मासिक पत्रिका

5

## सिमरन

(कबीर साहब की बानी)

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस. आश्रम - राजस्थान

25

## सवाल-जवाब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

31

## प्रेम-विरह

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन
16 पी.एस. आश्रम - राजस्थान

**स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक :** प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोन - 09950 55 66 71 राजस्थान व 09871 50 19 99 दिल्ली
**विशेष सलाहकार :** गुरमेल सिंह नौरिया फोन - 09928 92 53 04 व 09667 23 33 04
**उप सम्पादिका :** नंदिनी
**सहयोग :** रेनू सचदेवा, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

**सन्त बानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 99 | Website : www.ajaibbani.org

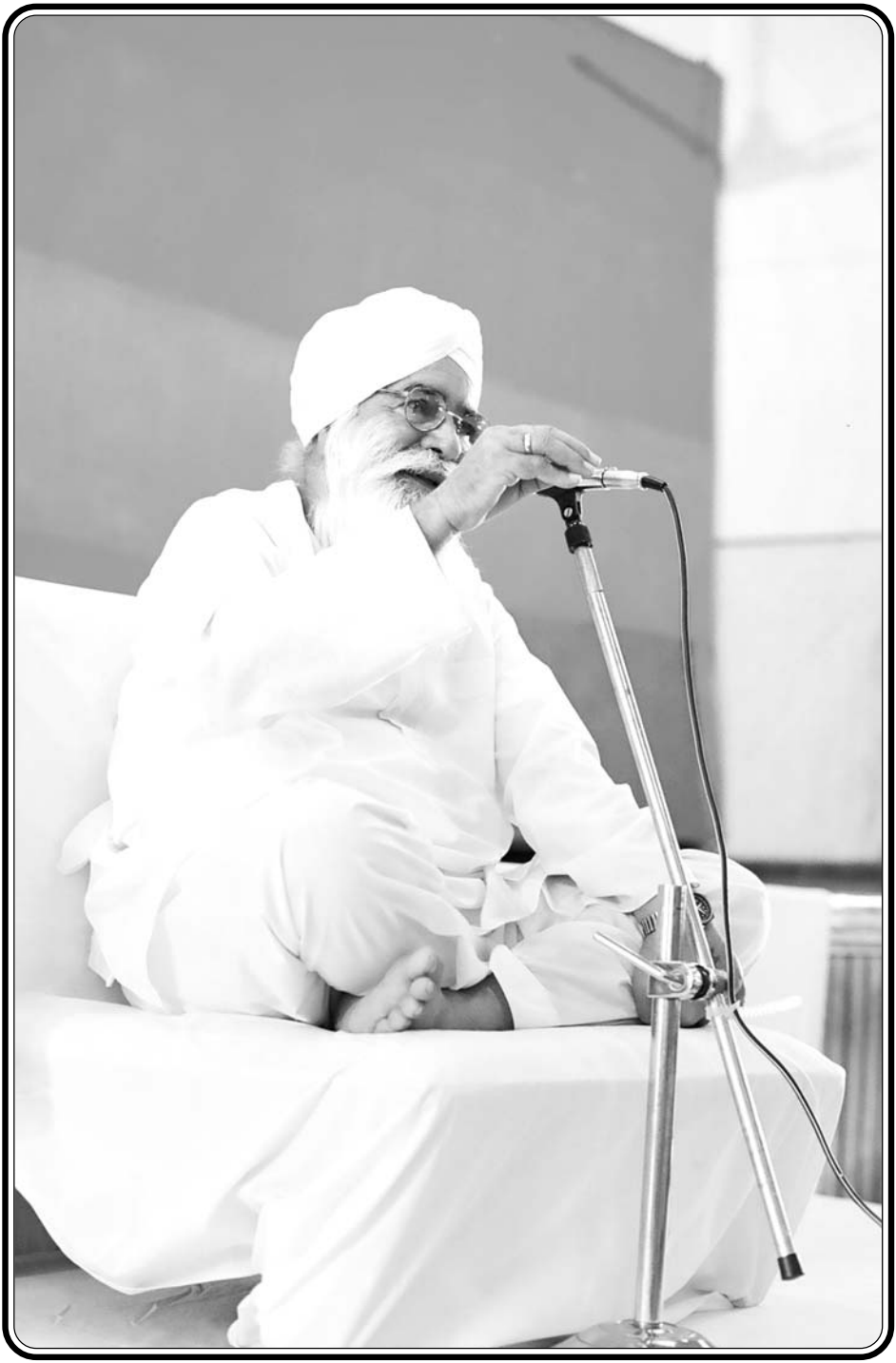

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# सिमरन

कबीर साहब की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

हर रोज की तरह कबीर साहब की बानी पर सतसंग किया जा रहा है, कबीर साहब हमें बहुत प्यार से अपने तजुर्बे बता रहे हैं। मैंने पहले भी बताया था कि यह बानी किसी एक विषय पर नहीं लिखी गई। कबीर साहब ने जैसा वातावरण देखा या जैसा किसी ने सवाल किया वैसे ही उनके जवाब दिए हुए हैं।

सन्तों-महात्माओं की बानी तजुर्बे से गुजरी होती है इसमें उनका अपना जीवन लिखा होता है। यह आने वाली नस्ल के लिए एक उदाहरण होता है। हमारा फर्ज बनता है हम इसे समझें और इससे फायदा उठाए।

**कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै राति जगावन जाइ।**
**सरपनि होइ कै अउतरै जाए अपुने खाइ।।**

किसी आदमी ने कबीर साहब से कहा, ''आप चुप-चाप मुहँ मे क्या गिट-मिट करते रहते हैं? हम सारी रात बाजे बजाते हैं जागरण करते हैं परमात्मा को हमारी ही भक्ति मंजूर है।'' कबीर साहब उसे प्यार से कहते है, ''प्यारेया! परमात्मा बहरा नहीं है जिसे तू बाजे बजाकर सुना रहा है। हरि के **सिमरन** के बिना आदमी बेसहारा है।''

मैं बताता रहता हूँ कि 'नाम' के बिना इंसान बेआसरा है। हम अपने पिछले कर्म मजबूरी के कारण भोग रहे हैं, हम इन्हें तबदील नहीं कर सकते चाहे रोएं! चाहे खुश रहें! लेकिन आगे का जीवन बनाने के लिए हम आज़ाद हैं। हम उत्तम जिंदगी तभी बिता सकते हैं अगर हम सन्तों के दिए हुए 'पाँच-शब्द' का **सिमरन** करें। महात्मा की शरण में जाकर अपने जीवन को बनाएं। गुरु नानकदेव जी सिमरन की महिमा बयान करते हुए कहते हैं:

*हरि सिमरन में आप निरंकारा।*

सन्त हमें सुना सुनाया या किताबों में से **सिमरन** नहीं देते। वे हमें अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं। सन्तों के दिए हुए सिमरन में परमात्मा है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

*सिमरो सिमर सिमर सुख पावो कल कलेश तन माहें मिटावो।*

अगर आप सन्तों का दिया हुआ सिमरन करते हैं तो काल की ताकतें - *काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार* रुपी कल्पनाएं आपको परेशान नहीं करती आसानी से हट जाती हैं; आपके मन के अंदर शान्ति आ जाती है। हर महात्मा ने **सिमरन** की बहुत ऊँची महिमा बयान की हैं।

हम जानते हैं कि संसार में हमारे जीने मरने का कारण **सिमरन** ही है। कोई आदमी ऐसा नहीं जिसके सारे काम पूरे हो गए हों। मौत आने पर किसी के दस काम पूरे होते हैं तो दस अधूरे रह जाते हैं। अंत समय में उन कामों की कल्पना अंदर उठनी शुरु हो जाती है और आखिरी वक्त हमारा ध्यान जिस तरफ होता है हम वहीं जन्म ले लेते हैं। हम जिस घर में बुजुर्ग होते हैं उसी घर में बछड़ा इत्यादि बनकर आ जाते हैं अगर हम ज्यादा जोर लगाएगें तो जहाँ पहले बाप थे वहाँ बेटा या पोता बनकर आ जाएगें ज्यादा दूर नहीं जाएगें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

*जहाँ आसा तहाँ वासा।*

सन्तों को हमारी इस कमजोरी का ज्ञान होता हैं। **सिमरन** को सिमरन काटता है। ध्यान को ध्यान काटता है। हम जिन चीजों को याद करते हैं उनकी तस्वीर हमारी आँखों के सामने अपने आप ही आ जाती है, बस! याद करने की देर है। बीबियाँ रसोई का काम करती हैं बस! याद करने की देर है मिर्च-मसाले आँखों के आगे घूमने लगते हैं। जमींदार अपने खेत को याद करता है बस! याद करते ही खेत की तस्वीर आँखों के आगे घूमने लग जाती है। इसी तरह जब कोई कलर्क

अपने दफ्तर को याद करता है तो फाइलें उसकी आँखों के सामने आ जाती हैं। महात्मा इसी को ध्यान कहते हैं।

सन्त हमें पाँच पवित्र 'नाम' देते हैं अगर हम प्यार से उन पाँच पवित्र नामों का सिमरन करते हैं तो हम दुनिया का सिमरन अपने आप ही भूल जाते हैं; दुनिया के **सिमरन** की जगह सन्तों का दिया हुआ सिमरन शुरू हो जाता है। जब हम सन्तों को याद करते हैं उनका दिया हुआ सिमरन करते हैं तो सन्तों की शक्ल हमारी आँखों के सामने घूमने लग जाती है आखिर हम उन मालिक के प्यारों के पास चले जाते हैं; वे सच्चखंड से आए हैं और हमें सच्चखंड ले जाते हैं।

लहर भी पानी है बूंद भी पानी है समुद्र भी पानी है फर्क सिर्फ बिछोड़े का है। जब तक बूंद अलग पड़ी है तब तक बूंद कहलाती है जब लहर के हवाले होकर बूंद समुद्र मे चली जाती है तब लहर उसे समुद्र की तह में लेकर बैठ जाती है। गुरु साहब बानी में बताते हैं:

*जन परोपकारी आए जीया दान दे भक्ति लायन हरि स्यों लैण मिलाए।*

सन्त सेवक के अंदर अपना जीवन रखते हैं। वे यही दान देने के लिए संसार में आते हैं। यह दान अमूल्य है खरीदने से नहीं मिलता। सन्त-महात्मा यहाँ आकर इसका व्यापार नहीं करते। परमात्मा ने सन्तों को यह जिम्मेवारी दी है कि आप जाकर आत्माओं को समझाकर लाओ, मेरा भेद बताओ। सन्त आकर प्यार से संदेश देते हैं चाहे! इसमें उन्हें कितनी ही मुश्किलें आएं। कबीर साहब कहते हैं:

*राम बुलावा भेजया दिया कबीरा रोय।*
*जो सुख साधु संग है सो बैकुंठ न होय।*

आप कहते हैं, ''परमात्मा ने हमें संसार में संदेशची बनाकर भेजा है। हमें संसार में यह संदेश बहुत रोकर देना पड़ा।'' आपको पता ही है कि काल के बहकाए हुए जीवों ने लोधी बादशाह को सिखा दिया कभी कबीर साहब को हाथी के आगे फैंका गया, कभी आपकी गठरी बनाकर गंगा में फैंका गया। आप अपनी बानी में कहते हैं:

*क्या अपराध सन्त है कीन्हा, बाँध पोट कुंच्चर को दीन्हा।*
*कुंच्चर पोट ले ले नमस्कारे, बूझे नहीं काजी अंधियारे।*

कबीर साहब उस प्रेमी को समझाते हैं, ''जो परमात्मा की भक्ति छोड़कर जागरण वगैरहा करते हैं ऐसे लोगों को यह सजा मिलती है कि परमात्मा उन्हें सर्प की योनि में डालकर सर्पनी बना देता है। सर्पनी कुंडल मारकर बच्चों को जन्म देती है; सर्पनी के अंदर प्यार होता है वह बच्चे को चाटती है लेकिन अंदर ही निगल जाती है। जो बच्चा कुंडल से बाहर होता है वही सर्प बचता है।''

ऐसे लोग नशा करके रात को जागते हैं। यहाँ सरदार हरबंस सिंह बैठा हुआ है। इसकी पत्नी सेवा करके बहुत खुश होती है। यहाँ के मूल निवासी जाट मेरे पास आते रहते हैं। उन्होंने हरबंस सिंह की पत्नी से कहा अगर आप जागरण करवाएं तो अच्छा है। इन्होंने मुझसे कहा बाबा जी! अगर हम सारी रात जागरण करें तो बहुत अच्छा होगा। मैंने कहा जैसा कहोगे साधु तो उसी तरफ तैयार है।

हमारे भजन बोलने वाले नानूनाथ और रूपराम दो खास बन्दे थे। इन्होंने कहा कि हम दिन में सो जाएंगे, रात को खूब चाय पिएंगे। इन्होंने बहुत सारा प्रशाद बनाया। ये दिन में ही प्रशाद खाकर सो गए। मुझे कोई खास काम पड़ा तो मैंने कहा कि नानूनाथ को बुलाकर लाओ। उन्होंने कहा कि वह तो सोया हुआ है। मैंने कहा कि उसे जगाकर ले आओ। जब वह आया तो उसने कहा कि आज सारी रात भजन बोलने हैं। वे रात को बार-बार चाय लेकर आएं तो मैंने कहा कि तुम्हारा यह कैसा जागरण है?

दूसरे दिन इन्होंने मांझूवास में जागरण रख लिया। मैं जब वहाँ गया तो देखकर घबराया वहाँ पर चालीस-पचास हुक्के रखे हुए थे। इन लोगों ने बताया कि जाट लोग हुक्का खूब पीते हैं। एक प्रेमी ने कहा कि हुक्के के बिना यहाँ लोग इकट्ठे नहीं होते इसमें तम्बाकू, इलायची,लौंग डाली हुई है। मैंने कहा, ''आप लोगों ने इक्ट्ठ करके क्या लेना है?''

जब हमनें रात को स्पीकर लगाकर वहाँ भजन बोले तो सारे ही पड़ोसी हमसे नाराज हो गए कि ये हमें सोने नहीं देते। अगले दिन इन्होंने मुझसे शिकायत की पड़ोसी बानी सुनकर खुश नहीं। पड़ोसी कहते हैं कि स्पीकर का मुँह दूसरी तरफ कर दो। मैंने कहा, ''वे लोग तो अपनी भक्ति के सच्चे हैं। उस समय मेरे पास 'दो-शब्द' का भेद था बेशक मैं ऐसा नहीं करना चाहता था लेकिन उन प्रेमियों को सबक देना चाहता था फिर उन्होंने ऐसा नहीं किया।''

**कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै अहोई राखै नारि।**
**गदही होइ कै अउतरै भारु सहै मन चारि।।**

कबीर साहब उसी प्रसंग को स्पष्ट करते है, ''जो हरि का **सिमरन** छोड़कर दूसरी तरफ लगता है औरत गधी की योनि में और मर्द गधे की योनि में जाता है। परमात्मा उसे यह सजा देता है कि वह चार मण वजन ढ़ोता है बेशक राजा ही क्यों न हो!''

*कबीरा गुरु की भक्ति बिन राजा गधा होय।*
*माटी लद्दे कुम्हार की घास न डारे कोय।*

अहोई एक शीतला देवी है। सितंबर के महीने मे राधाकुंड का मेला लगता है। आमतौर पर औरतों को शौक होता है, औरतें इस दिन व्रत रखती हैं। कबीर साहब कहते है कि परमात्मा उन्हें यह सजा देता है उन्हे गधी की योनि में डाल देता है।

**कबीर चतुराई अति धनी हरि जपि हिरदै माहि।**
**सूरी ऊपरि खेलना गिरै त ठाहर नाहि।।**

कबीर साहब उसी सवाल करने वाले को कहते हैं, ''प्यारेया! व्रत रखना, कीर्तन करना, देवी-देवताओं को पूजना और कर्मकांड करना आसान हैं लेकिन परमात्मा की भक्ति सूली पर नाच करने जैसी है। सूली पर नाच करना मुश्किल है अगर इंसान सूली से गिर जाए तो बहुत चोट लगती है। भक्ति इतनी मुश्किल है कि हर आदमी इस मैदान

में नहीं आ सकता। भक्ति बहुत चतुराई और समझदारी से करनी पड़ती है और भक्ति करके उसे संभालकर रखना भी मुश्किल होता है।''

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। आप बताया करते थे अगर सौ आदमियों की अक्ल इक्ट्ठी करे तो एक बनिया बनता है। हम जमींदार लोग बनिए को ज्यादा समझदार मानते है उसकी राय लेते है उसकी राय भी अच्छी होती है। सौ बनिए इक्टठे करें तो एक सुनार की अक्ल बनती है। सौ सुनारों की अक्ल इक्टठी करें तो एक राजा की अक्ल बनती है। सौ राजाओं की अक्ल इक्टठी करें तो परमात्मा की भक्ति करने वाला एक भक्त बनता है।

राजा समझदार होगा तो अपना राज्य अच्छा चला सकेगा, प्रजा को सुखी रख सकेगा। जैसे हमारे यहाँ राजा गंगा सिंह का राज्य था। वह कहता था, ''करप्शन करने वाले को या रिश्वत लेने वाले को चाहे परमात्मा बख्श दे लेकिन मेरी कलम नहीं बख्शेगी।''

भक्ति करना आसान नहीं। अंदर हमारा दुश्मन मन बैठा है अगर इंसान बुरे काम से बचता है तो इसे अच्छे काम में लगा देता है अगर काम-वासना से बचने की कोशिश करता है तो अंदर कल्पना करनी शुरु कर देता है। बहुत से मीठे पदार्थ है, स्वाद है जिन्हें मन हमारे सामने रख देता है। कबीर साहब कहते हैः

*काम काम सब कहत है काम न चीन्हा कोय।*
*जेती मन की कल्पना ते काम कहावे सोय।*

**कबीर सुोई मुखु धंन्हि है जा मुख कहीऐ रामु।**
**देही किस की बापुरी पवित्रु होइगो ग्रामु।।**

कबीर साहब कहते है, ''वही मुख पवित्र है जिससे हम **सिमरन** करते हैं परमात्मा को याद करते है। परमात्मा भक्ति का यह ईनाम देता है कि उस आदमी ने तो पवित्र होना ही था उसके आस-पास का वातावरण भी पवित्र हो जाता है।'' गुरु साहब बानी में कहते हैंः

*साध चरण अढ़सठ से उत्तम भूमि पवित्र जहाँ पग धरदे।*

**कबीर सोई कुल भली जा कुल हरि को दासु।**
**जिह कुल दासु न ऊपजै सो कुल ढाकु पलासु।।**

महाराज सावन सिंह कहा करते थे, ''सतसंगी की कुल तर जाती है। कमाई करने वाले की कई कुलें तर जाती हैं गुरमुख की तो अनगिनत कुलें तर जाती हैं। यह बहुत सोचने समझने वाली बात है कि जो सतसंगी बन जाता है कमाई करता है वह अपने घरवालों को अपने गुरु के बारे में जरुर बताता है अगर घर का कोई आदमी 'नाम' न भी प्राप्त कर सके और उसके दिल में गुरु प्यार बैठ जाए तो गुरु उस आदमी की भी संभाल करता है लेकिन मुक्ति 'नाम' में है परमात्मा उसे एक बार इंसानी जामा जरुर देता है।''

ढ़ाक की लकड़ी कोई खास कीमत नहीं रखती इसी तरह जिस घर में परमात्मा की भक्ति नहीं होती उनके घर में पुत्र-पुत्रियां ढ़ाक

पलास की तरह ही आते हैं; उन्होंने संसार में आकर जन्म लिया और चले गए भक्ति करके अपना कुछ सँवारा नहीं।

**कबीर है गइ बाहन सघन धन लाख धजा फहराहि।**
**इआ सुख ते भिख्या भली जउ हरि सिमरत दिन जाहि।।**

कबीर साहब गरीब जुलाहा जाति में पैदा हुए थे। अमीर लोग भक्तों का मजाक भी उड़ाते हैं। उस समय सिकंदर लोधी की मजबूत बादशाही थी वह भी कबीर साहब के खिलाफ था। कबीर साहब कहने लगे की बेशक कोई सारे संसार का चक्रवती बादशाह बन जाए चाहे उसके ऊँचे-ऊँचे निशान झूलते हों लेकिन ये सब किस काम के हैं?

*तपो राज राजो नरक।*

सन्त कहते हैं, ''हम तप करते हैं दान-पुण्य करते हैं ऐसा नहीं कि हमें दान-पुण्य का कुछ नहीं मिलेगा अगर आज हम झोंपड़ी में रहते हैं तो अगले जन्म में झोंपड़ी से बिस्तर उठाकर महल में लगा लेंगे। आज गरीब घर में हैं अगले जन्म में अमीर हो जाएगें सेठ-साहूकार बनकर आ जाएगें, हाथ से झाड़ू निकल जाएगा हुकूमत की बागडोर आ जाएगी लेकिन वहाँ भी दुख और मुसीबते हैं; बड़े आदमियों को बड़े दुख होते हैं।''

कबीर साहब कहते हैं, ''चार दिन के सुख, ऐश-आराम से तो भिक्षा ही अच्छी है अगर आपका समय परमात्मा की भक्ति में गुजरता है।'' सैन नाई एक गरीब आदमी था, वह बादशाह की मालिश किया करता था। उसने भक्ति की तो उसका काम गुरु-परमात्मा ने किया जिसने उसे 'नाम' दिया था। आज भी हम उसे प्यार से याद करते हैंः

*सैन नाई दुतकारिया ओह घर घर सुनया।*
*हृदय वसया पारब्रह्म भक्तां में गिनया।*

गुरु नानकदेव जी की बानी में आता है कि सैन नाई लोगों को घर-घर जाकर खबर देता था। उसने परमात्मा की भक्ति की परमात्मा

को प्रकट किया तो वह उच्चकोटि के महात्माओं में गिना जाने लगा और परमगति को प्राप्त हुआ।

**कबीर सभु जगु हउ फिरिओ मांदलु कंध चढाइ।**
**कोई काहू को नही सभ देखी ठोकि बजाइ।।**

चाहे सन्त बाहर न गए हों लेकिन इन्हें संसार का बहुत ज्ञान होता हैं ये अंदर ही सब कुछ जानते हैं। बेशक कबीर साहब बाहर की दुनिया में नहीं गए थे क्योंकि तब इतने साधन नहीं थे। आप कहते हैं, ''मुझे हर चीज का ज्ञान है यह दुनिया मतलब की है, जब मतलब हल हो जाता है कोई किसी को नहीं पूछता।'' गुरु तेग बहादुर कहते हैंः

*जगत में झूठी देखी प्रीत अपने ही हित स्यों सब लागे क्या दारा क्या मीत।*

इस जग में किसी को मित्र नहीं देखा गया; सब अपने-अपने मतलब के हैं। जितने दिन पत्नी अपने पति से प्यार करती है उतने ही दिन वह उसकी पत्नी है; जितने दिन पति पत्नी की जरुरतें पूरी करता है उतने ही दिन वह उसका पति है। महात्मा कहते हैं कि हमने हर जगह घूमकर ठोक-बजाकर देख लिया है कि कोई किसी का नहीं है।

*एह जग मीत ना देखयो कोई।*

पहले पश्चिम में ही वृद्ध आश्रम बनाए जाते थे आज यहाँ भी बनाए जा रहे हैं। पहले मुझे इस बारे में पूरी जानकारी नहीं थी कि वृद्ध आश्रम क्यों बनाए जाते हैं? अब पता लगा है कि वृद्ध आश्रम क्या चीज है। जिस तरह हम गौशाला बनाते हैं। गौशाला में बूढ़े बेकार लंगड़े बैलों को छोड़ आते हैं। कुछ लोग गौशाला वालों को 100-200 रुपए या थोड़ा बहुत अनाज भी दे आते हैं कि यह हमारे बैलों को खाने के लिए देना। वहाँ के प्रबंधक उन बैलों को 2-4 दिन में ही वहाँ से निकाल देते है। आखिर वे कितने पशु रख सकते हैं?

इसी तरह जब बुजुर्ग बच्चों को तंग करते हैं तो बच्चे उन्हें वृद्ध आश्रम में छोड़ आते हैं। मैंने कुछ दिन पहले अखबार में 5-6 बूढ़े-

बूढ़ियों की फोटो देखी। उसमें किसी की टाँग तो किसी का पेट दिखाया गया था कि ये सभी बीमार हैं इन्हें शारीरिक तकलीफ है और नीचे यह भी लिखा था कि ये करोड़पति घरों के हैं। इनके बच्चों ने इन्हें वृद्ध आश्रम में छोड़ा हुआ है कोई इनकी देखभाल नहीं कर रहा। कम से कम हमारी सरकार को तो इनकी सार लेनी चाहिए।

आप सोचकर देखें! पता नहीं उन लोगों ने कितने कीमती उसूल त्यागकर पैसे कमाए होंगे, कितनी मुश्किलों से अपने बच्चों को पाला होगा। पहले तो मरने के बाद कहा जाता था कि कोई किसी का नहीं होता उठाकर श्मशान भूमि में छोड़ आते हैं लेकिन आज तो हम जीते-जी देख रहे हैं कि हम बुजुर्गों को वृद्ध आश्रम में छोड़ आते हैं।

पश्चिम के बुजुर्ग लोग आकर मेरे पास रोते हैं कि हमारे बच्चे कहते हैं कि अब आप बूढ़े हो गए हो आपके दिमाग और ख्याल भी बूढ़े हैं। अब आप वृद्ध आश्रम में जाकर रहें लेकिन हम अपने बच्चों को छोड़ नहीं सकते। आप उनके लिए कुछ लिखें। मैंने इस बारे में काफी कुछ बोला हुआ है कि मैं जिस इलाके में रह रहा हूँ वहाँ के लोग बूढ़े बैल को भी घर से नहीं निकालते अगर वे ऐसा करते भी हैं तो समाज के लोग उनकी निंदा करते हैं। हमारे इलाके में कोई भी अपने माँ-बाप को घर से नहीं निकालता बल्कि उनकी बहुत सेवा करते हैं। सज्जनों! सन्तों ने जो लिखा है वह बहुत ठोक-बजाकर लिखा है।

**मारगि मोती बीथरे अंधा निकसिओ आइ।**
**जोति बिना जगदीस की जगतु उलंघे जाइ।।**

कबीर साहब प्यार से एक मिसाल देकर समझा रहे हैं कि शिव और पार्वती जंगल से गुजर रहे थे। वहाँ एक लक्कड़हारा लकड़ी काट रहा था। औरतें नरम स्वभाव की होती हैं उनमें दया की भावना ज्यादा होती है। पार्वती ने शिव से कहा, ''आप वरों के दाता हैं इसे भी कुछ दें।'' शिव ने कहा, ''इसकी प्रालब्ध में कुछ भी नहीं है।'' पार्वती ने फिर शिव से कहा कि आप मेरी विनती मानें इसे कुछ तो जरुर दें।

शिव ने रास्ते पर कुछ धन फैंक दिया। लक्कड़हारे के मन में ख्याल आया कि चलते समय अंधे लोग बहुत परेशान होते होंगे ठोकरें खाते होंगे; आँखें बंद करके देखा जाए कि अंधे कितने दुखी होते हैं। वह लक्कड़हारा आँखें बंद करके उस जगह से निकल गया जहाँ धन गिरा हुआ था। चलते हुए कहने लगा कि पैरों में कितने कंकड़-पत्थर चुभ रहे हैं। इस तरह अंधे आदमी तो बहुत ही परेशान होते होंगे। यह देखकर शिव ने पार्वती से कहा देख! इसकी क्या हालत है?

कबीर साहब ऐसे आदमी की मिसाल देकर समझा रहे हैं कि परमात्मा ने रास्ते में मोती बिखेरे हुए थे लेकिन लक्कड़हारा वहाँ से अंधा बनकर निकल गया। इसी तरह परमात्मा अपने प्यारे बच्चे सन्तों को संसार में भेजता है। सन्त-महात्मा मुफ्त में 'नाम' का मोती रखते हैं और आवाज़ देते हैं, ''प्यारेयो! इस मोती को उठाओ लेकिन हमारे कर्म हमारा साथ नहीं देते।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

*कर्म धर्म सब वंदना, नाम तुल्य ना समसरे।*
*नानका जिन नाम मिलया कर्म होया धुर कदे।*

अगर हमारे पिछले कई जन्मों के अच्छे कर्म हों तभी हम 'नाम' की तरफ आ सकते हैं। आप प्यार से कहते हैं:

*कर्म होए सतगुरु मिलाए सेवा सुरत शब्द चित लाए।*

**बूडा बंसु कबीर का उपजिओ पूतु कमालु।**
**हरि का सिमरनु छाडि कै घरि ले आया मालु।।**

सन्तों की गति सन्त ही जानते हैं अगर कोई आदमी यह कहे कि मैं सन्तों जैसा विशाल हृदय बना लूँगा वह चाहकर भी ऐसा नहीं कर सकता चाहे वह उनके घर में ही क्यों न जन्मा हो! ऐसा तभी हो सकता है जब हम उस मंजिल पर पहुँच जाएं। कई इतिहासकारों ने लिखा है कि कमाल कबीर साहब का बेटा था। लोई कबीर साहब की पत्नी थी। आमतौर पर कहा जाता है कि कबीर साहब ने शादी नहीं करवाई थी,

लोई उनकी सेवादार थी। कबीर साहब ने कमाल और कमाली को पाला था। कबीर की कबीर जानें।

एक दिन कबीर साहब ने कमाल से कहा, ''मैं नहीं जा सकता तुम सतसंग कर आओ।'' वहाँ लोगों ने कमाल को बहुत पैसे दिए। वह माया का पुतला था, पैसे लेकर खुश हुआ और सोचने लगा कि कबीर साहब बहुत खुश होंगे कि मैं इतना धन कमाकर लाया हूँ।

कबीर साहब उसे डाँटकर चेतावनी देते हुए कहते हैं, ''तू अच्छा बेटा बना है। तू सतसंग सुनाने गया था लेकिन परमात्मा की भक्ति छोड़कर धन घर ले आया है। सतसंग बेचने वाली चीज़ नहीं जो तू बेच आया है, हमारा वंश डूब जाएगा।'' कबीर साहब कहते हैंः

*मान गया आदर गया नैनन गया स्नेह।*
*ये तीने ओदों गए जब आखया कुछ दे।*

ज्ञानी जब दूसरों के आगे हाथ फैलाता है तो उसका ज्ञान-ध्यान सब कुछ खत्म हो जाता है।

**कबीर साधू कउ मिलने जाईऐ साथि न लीजै कोइ।**
**पाछै पाउ न दीजीऐ आगै होइ सु होइ।।**

कबीर साहब कहते हैं कि जब आप किसी महात्मा से मिलने जाते हैं तब मन के संकल्प-विकल्प आपको दुनिया की चीज़ें माँगने के लिए प्रेरणा देंगे आप इन्हें साथ लेकर न जाएं। साधु आपसे जो कहते हैं उसे मानें। साधु कहते हैं, ''आप सूरमा-बहादुर बनें, नाम जपें। दुश्मन मन के आगे हथियार न डालें, मन का कहना न मानें।''

मैं आपको बताता रहता हूँ कि हार जाना उतना बुरा नहीं होता जितना हार मान लेना बुरा होता है। आप मन पर **सिमरन** का हमला करें। जो दुश्मन के आगे हथियार डाल देगा वह किस तरह कामयाब होगा? संसार में कोई भी हमारा दुश्मन नहीं है, हमारा दुश्मन मन हमारे अंदर ही है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

*मन जीते जग जीत।*

अगर हम अपने मन पर फतह हासिल कर लें तो हम पूरे संसार पर फतह हासिल कर लेते हैं। हमारा मन किसी को मित्र तो किसी को दुश्मन बनाता है। यह मन ही सारे झगड़े करवा रहा है। जब साधु को मिलने जाएं उस समय अपने मन में दुनिया के ख्याल लेकर न जाएं और साधु के कहे अनुसार आँखों के पीछे जाकर सच्चाई को खुद देखें।

**कबीर जगु बाधिओ जिह जेवरी तिह मत बंधहु कबीर।**
**जैहहि आटा लोन जिउ सोन समानि सरीरु।।**

एक पढ़े-लिखे आदमी ने कबीर साहब से पूछा, ''ऐ जुलाहे! क्या तू स्वर्गों में जाएगा?'' कबीर साहब ने उससे कहा, ''देख प्यारेया! मैं अपने गुरु की दया से स्वर्ग-नरक से ऊपर उठ चुका हूँ। तू इस शरीर में बैठकर परमात्मा की भक्ति कर। यह शरीर नमक की तरह है पानी में एकदम घुल जाएगा।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''संसार की भेड़ चाल है। हम सारी जिंदगी इसी चाल में चलते हैं। जैसे भेड़ें एक-दूसरे की टाँगों में सिर डालकर चलती हैं इधर-उधर नहीं देखती। उसी तरह हम अपने बाप-दादा वाले रस्म-रिवाज़ तो करते हैं लेकिन कभी यह नहीं सोचते कि वे सिर्फ रीति-रिवाज़ में ही लगे थे या परमात्मा की भक्ति भी करते थे?'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

*कर्म धर्म पाखंड जो दीसै, तिस जम जो गाती लूटे।*

सब सन्त कहते हैं कि हम जो कुछ भी दिखावा कर रहे हैं यह सब पाखंड है। परमात्मा ने हमें बच्चे दिए, अच्छा खाना और शरीर दिया तो क्या परमात्मा ने कभी इसका एहसान जताया? अगर हम उसके नाम पर एक किलो चावल दे दें तो लम्बी-लम्बी अरदासें करते हैं और जिसे खिलाते हैं उस पर कितना एहसान जताते हैं कि हमने तेरे लिए कितना कुछ किया है! महात्मा प्यार से कहते हैंः

*तीर्थ व्रत और दान कर मन में धरे गुमान।*
*नानक नेह फल जात है ज्यों कुंचर स्नान।*

जैसे हम हाथी को नहलाते हैं तो वह अपने ऊपर राख डाल लेता है। उसी तरह हमें ऐसे दान का मालिक के दरबार में कोई फल नहीं मिलता। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि आप यह सब पाखंड कर रहे हैं।

अब कबीर साहब कहते हैं, ''प्यारेया! मैं उस जंजीर से बंधा हुआ नहीं हूँ जिससे संसार बंधा हुआ है। मैं आज़ाद हूँ और जो भी मेरे पास आता है मैं उसे भी 'नाम' देकर आज़ाद कर देता हूँ।''

**कबीर हंसु उडिओ तनु गाडिओ सोझाई सैनाह।**
**अजहु जीउ न छोडई रंकाई नैनाह।।**

कबीर साहब कहते हैं, ''जब यह हंस रुपी आत्मा शरीर में से उड़ने लगती है तब भी यह जीव अपना कंगाल रूप अंदर से नहीं निकालता। उस समय भी परमात्मा का ध्यान करने के बजाए अपने लाडलों को इशारे से समझाता है कि वहाँ पैसे रखे हैं; यह काम रह गया है इस काम को जरुर करना। यह तब भी परमात्मा की तरफ नहीं आता अन्त समय में भी इसकी यही हालत होती है।''

**कबीर नैन निहारउ तुझ कउ स्त्रवन सुनउ तुअ नाउ।**
**बैन उचरउ तुअ नाम जी चरन कमल रिद ठाउ।।**

कबीर साहब परमात्मा के आगे फरियाद करते हैं, ''हे परमात्मा! तू दया कर ताकि मेरी आँखों में तेरा गुरु स्वरुप बसा रहे। मैं जुबान से तेरी महिमा करता रहूँ और कानों से तेरा नाम सुनता रहूँ।''

**कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि।**
**चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि।।**

सन्तों की बानी न रोचक होती है न भयानक होती है यह यथार्थ होती है। आमतौर पर वेदों-शास्त्रों की कथाएं रोचक या भयानक होती

हैं। उनमें नरकों का डर दिखाया जाता है या स्वर्गों का लालच दिया जाता है लेकिन सन्तों की बानी में न तो स्वर्गों का लालच होता हैं और न ही नरकों का डर होता है।

कबीर साहब कहते हैं, ''देख भाई! मेरे अंदर न नरकों का डर है और न स्वर्गों की चाहत है। मैं अपने गुरु के चरणों में लगा हुआ हूँ। मैंने अपने गुरु के चरणों में रहना है और उन्ही चरणों में समाना है।''

**कबीर चरन कमल की मउज को कहि कैसे उनमान।**
**कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु।।**

कबीर साहब कहते हैं, ''मैं गुरु के चरणों की महिमा बयान नहीं कर सकता। जिसने गुरु की महिमा को समझ लिया उसने इन्द्रासन को भी लात मार दी। इन्द्र स्वर्गों का राजा था फिर भी वह भोगी था, वह नरकों में जाएगा। जब हम अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों पर्दे उतारकर सूरज, चन्द्रमा और सितारे पार कर लेते हैं तब हम गुरु स्वरुप के पास पहुँचकर सच्चे शिष्य बन जाते है फिर हमें पता लगता है कि गुरु चरण क्या ताकत है?'' स्वामी जी महाराज कहते हैंः

*गुरु चरण मेरे गृह आए सुत्ते दिए भाग जगाए।*

मैं बताया करता हूँ कि जो अंदर जाते है वे गुरु चरणों की अंदर और बाहर दोनों जगह महिमा बयान करते हैं। जब परमात्मा कृपाल यहाँ आए मैंने उनकी नज़र से बचाकर उनके पैर की मिट्टी उठा ली। सन्त बहुत समझदार होते हैं। आपने पूछा, ''यह क्या है?'' आप जानते हैं कि मुझे कविता बोलने की आदत है। वह जैसा यश करवाता है वह होता जाता है। मैंने कहाः

*तेरी सजरी पैर दा रेता चुक-चुक लावां हिक नु प्यारेया।*
*तेरे पंच शब्दां ने मैंनू तारेया।*

वह प्यार भरी मिट्टी मैंने आज भी संभाल कर रखी हुई है। मैंने काफी जगह छोड़ी, पिछले गाँव में भी काफी सामान छोड़ा लेकिन मैं

उस मिट्टी को छोड़ न सका उस प्यार को न भुला सका। बाहर वही कद्र करेगा जो अंदर जाता है।

कबीर साहब अंदर जाते थे उन्हें पता था कि गुरु के चरणों की महिमा क्या होती है? उन चरणों की महिमा बयान नहीं की जा सकती। अन्धे आदमी को पता नहीं कि हाथी कैसा होता है? आँखों वाला ही हाथी के बारे में बता सकता है कि हाथी कैसा दिखता है। आँखों वाला धोखा नहीं खा सकता वह सच्चाई बयान करेगा। बुल्लेशाह कहते हैं:

*बुल्लेया साड्डा ओथे वासा जित्थे बहुते अन्ने।*
*ना साड्डी कोई कदर पछाने ना सानूं कोई मन्ने।*

सन्त-महात्मा इस संसार में आए होते है यहाँ उनकी कोई कद्र नहीं होती, यह तो अन्धों का देश है। सुजाखे हों तो ही लोगों को पता चले कि सन्त क्या देने के लिए आए हैं और उनके दिल में हमारे लिए कितना प्यार है? सन्तों की महिमा बयान नहीं की जा सकती। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

*हौं कैसे कहूँ भाई कोई मेली नजर ना आई।*

मैं किसे बताऊँ कोई मिलाप करने वाला नजर ही नहीं आता!

**कबीर देखि कै किह कहउ कहे न को पतीआइ।**
**हरि जैसा तैसा उही रहउ हरखि गुन गाइ।।**

कबीर साहब कहते हैं कि सन्त कुछ देखकर ही कहते हैं लेकिन बहुत कम लोग उनके कहने पर ऐतबार करते हैं। भाग्यशाली ही उन पर ऐतबार करके अंदर जाते हैं। हीरों का व्यापार करने वाले बहुत कम होते हैं, कौड़ियों का व्यापार करने वाले तो आम ही मिल जाते हैं।

मैं कहा करता हूँ कि अच्छा भाग्य हो तो ही पूरा गुरु मिलता है और अच्छे कर्म हों तो ही पूरा शिष्य मिलता है। पूरा शिष्य बनना भी कोई आसान बात नहीं है। गुरु का शुक्रगुजार वही हो सकता है जो अंदर जाकर गुरु के साथ एक ज्योत हो जाए।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मैं ऐसे शिष्य के पैरों की धूल माँगता हूँ जो खुद 'नाम' जपता है और दूसरों को भी नाम जपाता है।''

**कबीर चुगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि चितारे।**
**जैसे बचरहि कूंज मन माइआ ममता रे।।**

कबीर साहब कूँज की मिसाल देते हैं जिस तरह कूँज को हर पल अपने बच्चों का ध्यान रहता है वह ध्यान किए बिना नहीं रह सकती। ध्यान के बिना उसके बच्चे पल ही नहीं सकते। हमारी भी यही हालत है हम सन्तों के सतसंग में जाते हैं भजन पर भी बैठते हैं लेकिन अंदर बैठे हुए माया को याद करते रहते हैं कि भजन में ज्यादा समय न हो जाए। हमारे कारोबार में फर्क न पड़ जाए, यह काम न रह जाए!

हम अभ्यास में बैठकर भी इन चीजों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। जब सन्तों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हमारा अभ्यास नहीं बनता। अपने दिल में झाँककर देखें! सारा दिन क्या सोचते रहते हैं?

**कबीर अंबर घनहरु छाइआ बरखि भरे सरताल।**
**चात्रिक जिउ तरसत रहै तिन को कउनु हवालु।।**

कबीर साहब पिछले प्रसंग को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि कूँज की तरह हमारे अंदर भी माया की ममता लगी हुई है हम दुनिया के पदार्थों को पुकार रहे हैं। जब बारिश होती है थलों में, रेत के टीलों में भी पानी रुक जाता है लेकिन पपीहा एक ऐसा पक्षी है जो रुके हुए पानी को नहीं पीता उसे बरसात की स्वाति बूंद का इन्तजार रहता है। वह अपनी आवाज से बारिश को पुकारता रहता है।

सेवक को भी पपीहे जैसा होना चाहिए चाहे गुरु उसके घर में कितने भी पदार्थ क्यों न रख दे लेकिन उसकी चोंच सिर्फ गुरु का यश गाने के लिए, गुरु प्यार के लिए ही खुले। वह गुरु के प्यार के लिए ही तरसता रहे। बेशक गुरु अपना दरवाजा खोलकर उसे छाती से क्यों न

लगा ले, उसे प्यार से भरपूर भी क्यों न कर दें फिर भी शिष्य की प्यास नहीं बुझती वह हर पल चाहता है उसका गुरु उसके पास ही हो।

महाराज कृपाल सिंह जी बताया करते थे कि एक बार महाराज सावन सिंह जी अपने गुरु बाबा जयमल सिंह के गाँव सतसंग करने के लिए गए। जब गाँव की सीमा पर पहुँचे तो उन्होंने झुककर वहाँ की मिट्टी को माथा टेका। सतसंग शुरू करने से पहले फूट-फूटकर रो पड़े। प्रबंध करने वाले प्रेमी कहने लगे, ''महाराज जी! आपकी यह हालत है तो संगत की हालत कैसी होगी?'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''अगर आज बाबा जयमल सिंह जी यहाँ हो तो मैं सब कुछ छोड़कर नीचे बैठने के लिए तैयार हूँ।'' प्यारेयो! जिन्हें गुरु का प्यार मिलता है क्या ऐसे शिष्य गुरु के प्यार से संतुष्ट हो जाते हैं?

मैं जब पश्चिम में गया वहाँ के प्रेमी ने एक तौलिया दिखाकर कहा कि कभी महाराज सावन सिंह जी ने इस तौलिए से हाथ पौंछे थे। जब उस प्रेमी ने महाराज कृपाल को इस तौलिए के बारे में बताया तो महाराज कृपाल ने वह तौलिया अपने सिर पर रख लिया और आपकी आँखें भर आई। महाराज कृपाल अक्सर अपने गुरु को याद करके अपनी आँखों में पानी ले आया करते थे क्योंकि प्रेमी के पास अपने अंदर की आग को बुझाने का यही साधन होता है। ऐसे आँसु उनके लिए अमृत का फव्वारा होते हैं।

जब मेरे गुरु कृपाल ने चोला छोड़ा मेरा तब का रोना सारे संसार में मशहूर है। कई प्रेमियों ने इस आँखों देखे हाल के बारे में लिखा भी है। मेरे पास बहुत से पत्र भी आए कि हमने एक ऐसे आदमी के बारे में सुना है जिसने अपने गुरु के प्यार में रो-रोकर अपनी आँखे भी गँवा ली हैं। कई प्रेमियों ने पूछा कि आप तो कहते हैं कि सन्तों के जाने के बाद रोना नहीं चाहिए फिर आप क्यों रोते हैं? मैंने कहा, ''मेरा गुरु मरा नहीं वह जिन्दा है। अंदर विरह उठती है, विरह एक ऐसी चीज़ है

जिसे भी लग जाए फिर उस पर कोई तंत्र-मंत्र काम नहीं करता; बस! उसके अंदर तो अपने गुरु के नाम की आराधना होती है।''

*मंत्र यंत्र चलदा नहीं कोई दवा ना कार करे।*
*दिल अंदर तस्वीर यार दी मुहँ थी नाम पुकार करे।*

कबीर साहब भी यही कह रहे है, ''बादल खूब बरसा जल-थल हो गया। पपीहे की प्यास नहीं बुझी क्योंकि वह स्वाति बूँद के लिए तड़पता है। यही हालत शिष्य की है कि वह गुरु के प्यार के लिए तड़पता है।''

**कबीर चकई जउ निसि बीछुरै आइ मिलै परभाति।**
**जो नर बिछुरे राम सिउ ना दिन मिले न राति।।**

कुदरत ने ऐसा बनाया है जिस तरह चकवी-चकवा रात को इक्ट्ठे नहीं रह सकते। जब सूरज की किरणें निकलती हैं तब उनका बिछोड़ा खत्म हो जाता है। जो लोग परमात्मा से बिछड़ जाते हैं वे परमात्मा से न दिन को मिल सकते है न रात को मिल सकते हैं उनके लिए कोई वक्त मुकर्र नहीं है; वे चौरासी लाख योनियों में चले जाते हैं फिर पता नहीं उन्हें दोबारा इंसानी जामा मिले या न मिले!

**कबीर रैनाइर बिछोरिआ रहु रे संख मझूरि।**
**देवल देवल धाहड़ी देसहि उगवत सूर।।**

कबीर साहब के नजदीक एक मंदिर था। आमतौर पर पंडित सुबह शंख बजाया करता था। आप मिसाल देकर समझाते हैं, ''देख शंख प्यारेया! अगर तू अपना ठिकाना समुद्र न छोड़ता तो तुझे मंदिर, शिवाले में जाकर रोज़ इतना कष्ट न सहना पड़ता; पंडित पीछे से जोर से फूंक मारता है ताकि ज्यादा आवाज आए। यह तो एक मिसाल है लेकिन सच्चाई यह है कि आत्मा भी अपना ठिकाना छोड़कर मन-माया के देश में आई है। यहाँ आकर इसे कभी बैल, कभी घोड़ा तो कभी गधा बनकर परेशान होना पड़ता है।''

प्यारेयो! इंसान का जामा ही इतना मुश्किल है तो बाकी जामों का क्या कहना? कोई बिमारी की वजह से परेशान है कोई बेरोजगारी की वजह से परेशान है। किसी को कर्ज लेने का दुख है तो किसी को कर्ज देने का दुख है। कोई औलाद न होने पर दिन-रात तड़प रहा है तो कोई औलाद से परेशान है।

महात्मा आत्मा से कहते हैं, ''ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि तू अपना समुद्र-परमात्मा का देश छोड़कर इस जग में आई अगर तू वापिस अपने देश समुद्र में चली जाए तो तेरी सारी तकलीफें दूर हो जाएंगी और तू परमात्मा जैसी हो जाएगी।''

**कबीर सूता किआ करहि जागु रोइ भै दुख।**
**जा का बासा गोर महि सो किउ सोवै सुख।।**

कबीर साहब किसी सोए हुए को देखकर कहते हैं, ''प्यारेया! तू इतना आलसी क्यों है? क्या तुझे पता नहीं कि तूने कब्र में जाना है या अग्नि में जल जाना है, तुझे आराम कैसे सूझ रहा है? तू 'नाम' जप शब्द की कमाई कर और आलस छोड़ दे।''

कबीर साहब ने हमें बहुत प्यार से समझाया है कि भक्ति करने के क्या फायदे हैं? सन्त-महात्मा संसार में आकर 'नाम' का होका देते हैं। हमारा फर्ज बनता है कि हम 'शब्द-नाम' का **सिमरन** करें अपने जीवन को सफल बनाएं। ❁❁❁

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

# सवाल-जवाब

***एक प्रेमी*** *: जो बच्चे आश्रम के वातावरण में पले-बड़े होते हैं, उनके ऊपर माता-पिता का बहुत प्रभाव होता है लेकिन जब वे बच्चे बड़े होते हैं तो उनमें दुनिया को जानने की बहुत जिज्ञासा होती है। उनमें ऐसी जिज्ञासा न हो इसके लिए क्या करना चाहिए?*

**बाबा जी**: मैं सबसे पहले आपको अपनी जीवन घटना बताऊगाँ। मैं आमतौर पर दुनिया से अलग ही रहा हूँ। मैंने जब से होश संभाली जमीन के अंदर ही मकान बनाकर रहा। मैं आर्मी में रहते हुए सिनेमा देखने या भीड़भाड़ में बिल्कुल नहीं जाता था, अपना काम खत्म करके बैरक में आकर लेट जाता था। मेरे दूसरे साथी जिन्हें घूमने की आदत थी वे शहर में घूमकर अपना कीमती समय खराब करते और मुझसे कहते, ''वह इंसान दुनिया में क्या लेने आया है जिसे दुनिया की जानकारी ही नहीं।'' मैं सब कुछ सुनकर भी चुप रहता था।

जब मैं अठारह साल तक मकान में बैठकर 'दो-शब्द' का अभ्यास करने जाता था तो रास्ते में मुझे कई प्रेमियों के ताने-मेहणे सुनने पड़ते थे क्योंकि मेरा मकान खेत के अंदर था। वे लोग मुझसे कहते कि यह दुनिया में क्या लेने आया है, रब को जाकर क्या बताएगा कि दुनिया में क्या देखा? मैं उनसे कहता, ''यह तो वक्त ही बताएगा आप लोग दुनिया में जाते हैं अगर आप लोगों ने कुछ कमाया है तो मुझे दिखा दें।'' खैर मैं अठारह साल तक ऐसी बातें सुनता रहा।

आप देख ही रहे हैं जब वक्त आया तो मेरे गुरु ने मुझे सारे संसार में भेज दिया, हर एक के साथ संपर्क पैदा कर दिया। कई आदमी सैर के तौर पर काफी मुल्कों में घूमें उन्होंने अपनी जिंदगी में

काफी समस्याएं पैदा की। ज्यादा घूमने वाले लोग कामयाब नहीं होते ये हमारे मन के अपने ही बलबले हैं।

कई बार बच्चे अच्छी सोहबत में पैदा होते हैं। जब तक माता-पिता का साया रहता है वे उनकी सोहबत में रहते हैं। जब माता-पिता का साया उठ जाता है वे बाहर की दुनिया में जाते हैं तो उनके अंदर ऐसे ही बलबले होते हैं। जिन्हें नई दुनिया की जानकारी नहीं होती वे बुरी संगत में जाकर बुरा ख्याल करते हैं। जब उन्हें परेशान लोग मिलते हैं तो वे उनके अंदर भी परेशानी पैदा कर देते हैं कि तुम्हारे माँ-बाप ने सही जानकारी नहीं दी अगर सही जानकारी दी होती तो शायद तुम ऐसे परेशान न होते जैसे आज हो।

हम भूले लोग हैं। हमारे माता-पिता ने हमारे ऊपर जो एहसान किए होते हैं हमने उनके साये में रहकर अच्छी जिंदगी बिताई होती है फिर हम उनके ही खिलाफ हो जाते हैं। यह हमारे ऊपर हमारी सोहबत का ही असर होता है। दुनिया की जानकारी देने के लिए आजकल रेडियो, टी.वी और अखबार हैं। आपको घर में बैठे बिठाए ही सब जानकारी मिल जाती है कि कहाँ क्या हो रहा है?

पप्पू पढ़ा-लिखा है इसे दुनिया की काफी जानकारी है यह दिल्ली जैसे बड़े नगर में पैदा हुआ है। जब मेरे साथ इसका मिलाप हुआ और हम पहले टूर पर जाने लगे, हम हवाई जहाज में बैठ गए तो यह मुझे प्यार से समझाने लगा कि पेटी बाँधकर शरीर को पीछे की तरफ रखें। इसने कई बार मुझसे कहा क्योंकि इसे यही था कि शायद इन्हें ज्ञान नहीं, यह एक जमींदार आदमी हैं।

मैंने पप्पू से हँसकर कहा, ''बेटा पप्पू! शायद तुझे डर लग रहा होगा!'' पप्पू ने हँसकर कहा, ''हाँ जी।'' मैंने उससे कहा कि मैंने आर्मी में पॅराशूट के जरिए लैंड किया था। मैं पहली बार हवाई जहाज में सफर नहीं कर रहा। इसी तरह जब मैं पहले टूर पर बाहर गया तो

जगह-जगह मुझसे पूछा गया कि आपको यह सफर कैसा लगा? क्या आपने पहले कभी हवाई जहाज देखा था? मैंने कहा, ''हाँ! अच्छी तरह।''

मेरे कहने का भाव अगर हमारी बुद्धि ठीक है तो दुनिया का ज्ञान अपने आप ही हमारी समझ में आ जाता है। हम दुनिया में जितना ज्यादा संपर्क पैदा करते हैं उतने ही अपने होश गुम कर लेते हैं। यह नहीं सोचते की इस बन्दे में क्या गुण है और क्या अवगुण है?

मुझे बहुत से बच्चों के पत्र आते हैं वे इंटरव्यू में भी बताते हैं कि जब तक वे माता-पिता की छाया में होते हैं तब तक उन्हें कोई परेशानी नहीं होती। जब वे बाहर दुनिया के साथ संपर्क करते हैं अपने साथ बीती कहानियाँ लिखते हैं या इंटरव्यू में बताते हैं तो मुझे सुनकर बहुत दुख होता है क्योंकि ये मेरे बच्चे हैं। मेरे पैरों के नीचे से जमीन हिलती है कि मेरे बच्चों के साथ ऐसा क्यों हुआ? लेकिन जैसा बलबला लेकर यह सवाल किया गया है इसी तरह उन बच्चों के अंदर बलबले होते हैं।

***एक प्रेमी** : जब किसी बच्चे को गुरु की तस्वीर दिखाते हैं तो वह हँसता है; इसका क्या मतलब होता है?*

**बाबा जी** : बच्चे भोली आत्मा होते हैं। इनके ऊपर बड़ी जल्दी असर होता है, इन्हें अंदर खुशी होती है। वे अपनी खुशी हँसकर ही जाहिर कर सकते हैं अगर बच्चा तीन चार साल का हो उसके माता-पिता ऐसा विश्वास दिलाते रहते हैं तो कई बार वह बच्चा गुरु से संपर्क भी जोड़ लेता है; माता-पिता को कई संदेश भी बताता रहता है।

मैं आपको अपनी एक घटना बताना चाहूँगा जो हर सतसंगी के लिए फायदेमंद है। गंगानगर के अस्पताल में महाराज सावन सिंह जी की एक नामलेवा सिविल सर्जन थी। वह काफी अच्छी थी, रोगियों के प्रति उसका अच्छा बर्ताव था। एक मियां-बीवी उसके पास गर्भपात करवाने के लिए आए लेकिन उसके दिल में हमदर्दी थी उसने उस मियां-बीवी से कहा कि यह ठीक नहीं क्योंकि पेट में बच्चा बन चुका है।

वह सर्जन आमतौर पर मेरे पास आती जाती थी, मैं भी उसके घर आता-जाता था। उसने मेरे साथ बात की कि आप इन्हें सलाह दें। मैंने उस मियां-बीवी को बहुत समझाया लेकिन उन पर कोई असर न हुआ। आखिर मैंने कहा, ''देखो! लड़का हो या लड़की हो मैं इसे ले लूँगा।'' हमारे हिंदुस्तान में लड़की के ऊपर ज्यादा से ज्यादा खर्च होता है। सारी जिंदगी की कमाई एक लड़की की शादी करने में ही लग जाती है इसलिए लोग लड़की पैदा होने से घबराते हैं। लोगों के पास जायदादें कम होती है वे लड़कों के पालन-पोषण के बोझ से भी घबराते हैं।

खैर! वह मियां-बीवी मेरी बात पर खुश हुए उनके घर लड़का पैदा हुआ। वह लड़का बहुत सुंदर था। मैंने प्यार से उसका नाम कृष्ण की गोपी रखा, वह बहुत प्यारा बच्चा था। वह जब छोटा था तो महाराज कृपाल उसे अपनी गोद में लेते, उसे प्रसाद भी देते थे। महाराज जी उससे बहुत प्यार करते थे और वह बच्चा भी आपसे बहुत प्यार करता था। आप उसकी जीवनी के बारे में सोचते! इस बच्चे के माता-पिता तो इसे पेट में ही सजा दे रहे थे लेकिन अब यह बच गया।

थोड़ा सा बड़ा होने पर वह मेरे साथ मकान के ऊपरी हिस्से में सोता था लेकिन उसे पेशाब करने के लिए नीचे आने में मुश्किल होती थी। एक दिन महाराज जी ने रात को स्वप्न में आकर उससे कहा, ''बेटा! गोपी तू पेशाब के लिए नीचे न जाया कर इसी जगह पेशाब कर लिया कर।'' वहाँ छत पर पानी निकलने के लिए परनाला लगा हुआ था। वह उठकर मुझसे कहने लगा कि महाराज जी मुझे इस तरह कहकर गए हैं। मैंने कहा, ''तेरे महाराज जी जिस तरह कहकर गए है तू उसी तरह कर लिया कर।''

महाराज कृपाल के आने का कोई निश्चित समय नहीं होता था। जब भी आपकी मौज होती आप आ जाते थे। आप एक दिन आए और जहाँ आकर बैठे परनाला उसी जगह था। उस जगह के पास से ही पेशाब की बदबू आ रही थी। महाराज जी ने पूछा, ''यहाँ बदबू क्यों आ रही

है?'' मैंने महाराज जी से कहा, ''आप जिसे यह क्रिया करने के लिए बताकर गए थे आपका वही सेवक यह काम कर रहा है।''

महाराज जी ने गोपी की तरफ देखा और उसे प्रसाद भी दिया। आपने कहा, ''इस बच्चे की उम्र बहुत छोटी है। यह ज्यादा से ज्यादा 23-24 साल तक ही जिएगा।'' यह सुनकर मैं चुप रहा। जब वह लड़का आठ साल का हुआ तब उसके माता-पिता ने उसे देखा और सोचा कि हमारे परिवार में तो कोई इतना सुंदर बच्चा पैदा ही नहीं हुआ। उन्होंने उस बच्चे को घर ले जाना चाहा। मैंने उन्हें काफी समझाया कि इसे घर ले जाने का आपको कोई हक नहीं बनता लेकिन उसके माता-पिता नहीं माने उसे घर ले गए। मैंने उन्हें महाराज कृपाल की बात बताई कि इसकी उम्र छोटी है आप बाद में पछताएंगे। उन्होंने ऐतबार नहीं किया।

जब वह बच्चा तेईस साल का हुआ तो उसके ऊपर पेट्रोल गिर गया आग ने उसे जला दिया। वह एक महीना अस्पताल में रहा। उसे इस बात का दुख नहीं था कि उसे इतनी तकलीफ है। जब मैं उसे देखने गया तो उसने मुझसे कहा कि मैंने आपके साथ ठीक नहीं किया। मैंने कहा इसमें तेरा कोई कसूर नहीं। आप सोचकर देखें! उसकी जिंदगी कैसी थी? आखिर महाराज जी ने बीकानेर अस्पताल में खुद आकर उसकी संभाल की।

हमारा ख्याल दुनिया में फैला होता है लेकिन बच्चों का ख्याल दुनिया में फैला हुआ नहीं होता। वह जब अस्पताल में था तो उसने कोई दर्द महसूस नहीं किया। वह अपने परिवार से यही कहकर गया कि सतसंग नहीं छोड़ना। अब वह परिवार सतसंग में भी आता है और पछताता भी हैं कि हमने महाराज जी की बात पर ऐतबार नहीं किया।

अगर माता-पिता चाहें तो बच्चे की दुनियावी और रुहानी जिंदगी दोनों अच्छी बना सकते हैं। यह तभी हो सकता है अगर हम अपना आप सुधारें। महाराज सावन सिंह जी कहते थे, ''अगर हम अपनी औलाद को नेक बनाना चाहते हैं तो पहले खुद नेक बने।''

महाराज सावन सिंह जी एक कहानी सुनाया करते थे कि एक बादशाह की लड़की का किसी शहजादे से प्यार हो गया। उस समय हिन्दुस्तान में जाति-पाति का बहुत बोल-बाला था। लड़के वालों ने लड़की वालों से रिश्ता करने को कहा लड़की वालो ने रिश्ता देने से इंकार कर दिया। लड़की ने शहजादे से कहा अगर ये लोग नहीं मानते तो कोई बात नहीं हम दोनों अपनी जिंदगी अलग से बिता लेंगे।

उन दिनों जीपें, कारें नहीं थी। आमतौर पर ऊँट की सवारी होती थी। रात के समय लड़की अपने घर से ऊँटनी लेकर शहजादे के पास आई। दोनों ऊँटनी पर बैठकर बाहर जाने लगे रास्ते में एक छोटी नदी आई। लड़की ने कहा कि नकेल खींच ताकि यह ऊँटनी पानी में न बैठ जाए! इसकी माँ को भी यही आदत थी।

लड़के के दिल में ख्याल आया अगर पशुओं की आदत अपने माता-पिता पर जाती है तो इंसानों में भी ऐसा ही होगा। मैंने तो इस लड़की के साथ दुनियादारी के तौर पर शादी नहीं की कोई रस्म भी नहीं की, मैं इसे गलत तरीके से लेकर जा रहा हूँ। इसके पेट से जो औलाद होगी क्या वह हमारी नकल नहीं करेगी?

शहजादे ने उस लड़की से कहा कि मैं कोई खास सामान घर में भूल आया हूँ अभी रात काफी है तू मेरे साथ वापिस चल; हम वह सामान ले आते हैं। लड़की को मालूम नहीं था कि यह मन बदल चुका है। जब वे वापिस पहुँचे तो शहजादे ने लड़की से हाथ जोड़कर कहा, ''हम बहुत बुरा कर्म करने जा रहे थे हमें ऐसा नहीं करना चाहिए।''

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे सबसे पहले अपनी जिंदगी साफ और पवित्र बनाते हैं फिर वे परमात्मा को अंदर बैठने की जगह देते हैं। उनकी सच्चाई का ही हमारे ऊपर असर पड़ता है। उन्हें देखकर ही हम अपनी जिंदगी को अच्छा बनाने की कोशिश करते हैं। हम सोचते हैं अगर हममें कोई नुख्स हुआ तो लोग हमारे गुरुदेव को कहेंगे कि इसके शिष्य कैसे काम करते हैं? ***माड़ा कुत्ता खसमें गाल।***

❁❁❁

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन

# प्रेम-विरह

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

दिल देने का नाम प्रेम है। जिस एक के ज्ञान को बुद्धि देखना चाहती है दिल उसे मौहब्बत के साथ महसूस करना चाहता है; जानने से दर्शन हो सकते हैं लेकिन मिलाप केवल **प्रेम** से ही मुमकिन है। जो लोग केवल जानने को ही काफी समझते हैं वे उसमें लीन होने के सरूर को नहीं पा सकते। प्रेम और पूर्ण ज्ञान में कोई फर्क नहीं।

उपनिषद कहते हैं कि इस जगत में जो कुछ है वह ईश्वर से ढ़का हुआ है। इस जगत को ईश्वर के ख्याल से ढ़क दें, यह दिल देने का ही मजबून है। ईश्वर को दिल दिया और उसके ख्याल से सारे जगत को ढ़क दिया। जगत में जो कुछ है वह ईश्वर ही है। ईश्वर को छोड़कर और कुछ नहीं यही प्रेम और ज्ञान भी है। सोचें! विचारें! ज्ञान और **प्रेम** में क्या फर्क है?

***ऐहो विष संसार तुम देखदे ऐह हर का रूप है रूप नगरी आया राम।***

दिल दे दिया यह दिल प्रीतम को केन्द्र बनाकर उसी में टिक गया; इसे ही ज्ञान कहते हैं। ज्ञान की मुराद केवल समझना ही नहीं ज्ञान से मुराद हो जाना है जोकि असल में हम हैं। फिर उपनिषद कहते हैं कि उसने जो कुछ दिया है उसे भोग। अपने दिल में उस दौलत की हवस को जगह न दे जो तेरी नहीं है।

दिल दे देने का खास गुण है कि फिर प्रीतम की रजा में राजी रहे, जिसमें यह गुण आ जाए उसे ही ज्ञान का अधिकार है। जो लालच में फँसा हुआ है उसे ज्ञान की प्राप्ति कहाँ? मालिक को जानना उससे प्रेम करना है। मालिक में लीन होना उसकी आलौकिक खूबसूरती को लोचना और उसमें एक होकर रहना है।

## प्रेम और वैराग्य

वैराग्य का अर्थ घर-बार का त्याग नहीं। वैराग्य चित्त की निर्मल वृति का नाम है जिसके कारण लोक-परलोक के सब विषयों से उपरामता होकर ख्वाहिशों का पूर्ण त्याग हो लेकिन विवेक से रहित सच्चे वैराग्य का होना असंभव है। **प्रेम** और वैराग्य दो पदार्थ नहीं, ये एक ही चित्तवृति के दो नाम हैं। जो पुरुष जितना वैरागवान होता जाएगा वह उतना ही प्रेमी भक्त होता जाएगा। जिनके अंदर मालिक का प्रेम नहीं जान लें उनके चित्त में वैराग्य भावना बिल्कुल नहीं। जितना चित्त ख्वाहिशों से रहित होता जाएगा उतना ही वह प्रेम से भरपूर होता जाएगा।

संसार में कोई आसक्त पुरुष कभी प्रेमी नहीं हो सकता। दुनिया से हाथ धोकर मालिक को सजदा करें। बिना वजू के नमाज की अदायगी जायज नहीं होती। वैराग्य और **प्रेम** एक ही चीज हैं। जब तक चित्त विषय-वासना से निराश न हो भक्ति का कोई रस नहीं आता। देखने में आया है कि भक्ति के शुरू में वैराग्य के होते हुए भी भक्त अपनी खास जरूरत की चीजें मालिक से माँगते रहे। सिर्फ इस ख्याल से कि परमार्थ निर्विघ्न सिद्ध हो जाए।

*दोए सिर माँगो चूना पाओ घिओ संग लूना।*
*अध सिर माँगो दाले मोको दोनो वक्त जवाले।*
*खाट माँगो चौपाई सिरहाना अवर तलाई।*
*ऊपर को माँगो खीदा तेरी भक्ति करे जन थीदा।*
*मैं नाहीं कीता लभ्भो इक नाओ तेरा मैं फब्बो।*

वैराग्य पूरा होने पर भक्तजन भगवान से कुछ नहीं माँगते। वे खुदा से खुदा को ही माँगते हैं क्योंकि उसको छोड़कर और सब चीजें नाशवान और दुख का कारण हैं।

*विन तुध होर जे मंगणा सिर दुखां दे दुख।*
*दे नाम संतोखिया उतरे मन की भुख।*

मालिक से कुछ न माँगने का कारण यह है कि भक्त उसकी याद में किसी तरह की कमी नहीं देखता। उसके सब दुख-दर्द और भ्रम नाश

हो जाते हैं। जिसे **प्रेम** का रस आ गया वह दुनिया के रसों में नहीं फँसता। उसका कहा मालिक की दरगाह में परवान है इसलिए वह दुनिया की किसी चीज को नजर में नहीं लाता।

## प्रेम और मोह

**प्रेम** मोह नहीं। प्रेम और मोह में बड़ा भारी फर्क है। मोह में इंसान अपने जिस्म, स्त्री, बच्चों, रिश्तेदारों, मजहब और कौमो में जकड़ा जाता है। इन्हें छोड़कर दूसरों के साथ दुश्मनी पैदा कर लेता है। मोह में तंगदिली और खुदगर्जी के ख्याल होते हैं उन्हें पूरा करने के लिए इंसान जुल्म करता है जिसका नतीजा दुख ही दुख होता है इसलिए इंसान सच्ची अक्ल से ठीक तरह काम नहीं ले सकता।

**प्रेम** इन सब मैलों से रहित होता है। प्रेमी सबके साथ प्यार करता है। मोह में इंसान चमार बन जाता है। इसका काम व्यापार की नजर से देखना रह जाता है। मोह वाली दुनिया एक तरह से बनिए की दुकान बन जाती है; जहाँ से कुछ मिले वहाँ दें और जहाँ से कुछ न मिले वहाँ न दें। **प्रेम** देना जानता है, मालिक रूपी प्रेम सबके अंदर है। वह बिना किसी से कुछ लेने के ख्याल से सबके साथ ज्यादा प्यार करता है। प्रेम जीवन का आधार है जिंदगी का सहारा है।

## प्रेम और काम

प्रेम विषय-वासना का नाम नहीं क्योंकि विषय-वासना में काम की मिलावट है। **प्रेम** और विषय-वासना दोनों अलग अलग चीजें हैं, इनमें जमीन आसमान का फर्क है। प्रेम आलौकिक जीवन है और वासना हैवानी जज्बा है। काम हैवानियत का जज्बा हमेशा अपने सुख के लिए होता है। कामी पुरुष दूसरे को अपने भोग का जरिया बनाना चाहता है।

शेष अगले अंक में.....

# धन्य अजायब

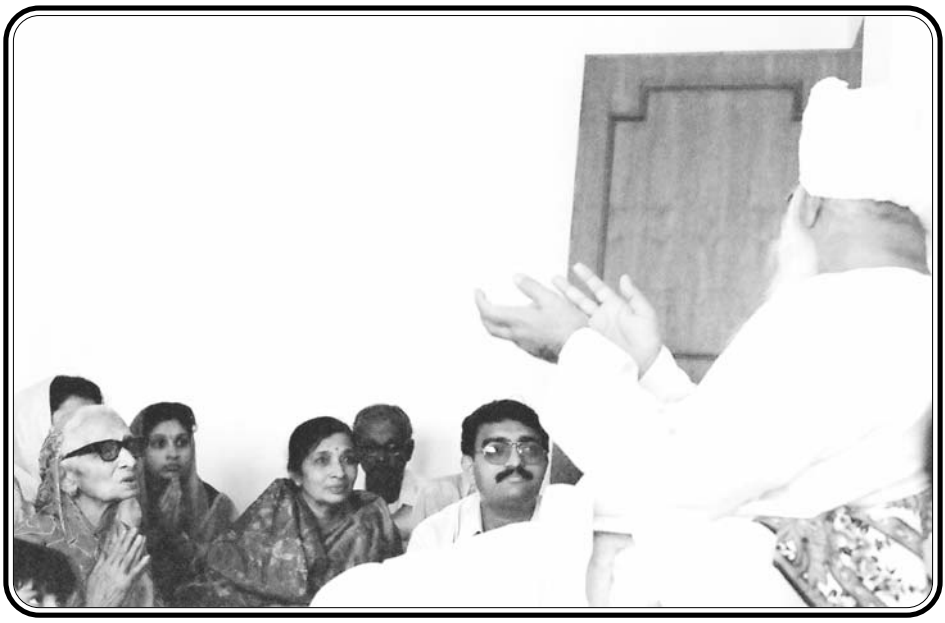

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी अहमदाबाद में 6, 7 व 8 अगस्त - 2010 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन,
फुटबाल ग्राउंड के सामने,
(कांकरिया झील के पास),
अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करे:
शैलेष शाह - 93270 11142, 94267 26583